ग्रामीण राजस्थान में प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थियों को प्राथमिक स्तर की अँग्रेज़ी पढ़ाना

एकता धनकर, ज्योत्स्ना लाल, शिप्रा सुनेजा, वर्धना पुरी

माधोपुर हेज़ अ फॉरेस्ट ई, आई, ई, आई, ओ; अ टाइगर हियर...अ टाइगर देयर...टाइगर, टाइगर एवरीव्हेयर ।

अरे! घबराइए मत! रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान में भी बाघों का दिखना इतनी आम बात नहीं है।

यह गाना तो उदय कम्युनिटी स्कूल की एक कक्षा में बच्चे गा रहे हैं, जहाँ वे जानवरों और पक्षियों के विषय पर पढ़ाई कर रहे हैं। यह कविता अँग्रेज़ी के एक लोकप्रिय गीत *ओल्ड मैकडोनाल्ड हेड ए फ़ार्म* की धुन पर गाई जा रही है, बस जगह के हिसाब से थोड़ी बदल दी गई है। ये बच्चे पूर्वी राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले में रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास के गाँवों में रहते हैं।

एक अन्य महीने में सर्दियों में दोपहर की धूप के ढलने के साथ कक्षा ज़ोर-ज़ोर से एक कहानी पढ़ रही है, लेकिन किसी निर्धारित पाठ्यपुस्तक से नहीं।

"इट वाज़ द मंथ ऑफ़ दिसम्बर। अनवर एंजॉय्ड प्लेइंग इन द सन विद् हिज़ फ्रेंड्स। ही लाइक्ड टु वॉक इन द मस्टर्ड फील्ड्स।"

यह कहानी बच्चों के पढ़ने के स्तर, सन्दर्भ और अनुभवों को ध्यान में रखकर लिखी गई थी। एक मानक पाठ्यपुस्तक में ऐसी कहानी मिलना मुश्किल तो है, लेकिन नामुमकिन नहीं। बच्चे एक अपरिचित भाषा में एक परिचित दृश्य के बारे में सुन रहे हैं। मौसम के साथ इस बदलते नज़ारे से बच्चे अच्छी तरह से परिचित हैं क्योंकि उनके गाँवों में ज़्यादातर किसान सर्दियों में सरसों उगाते हैं। चूँकि ज़्यादातर बच्चे या तो इन खेतों में खेलते हैं या अपने परिवारों की मदद करते हैं, यह कहानी उनके अनुभवों से जुड़ी हुई है।

यह कविता और कहानी उन पाठ्यों (टेक्स्ट्स) का एक उदाहरण है जिन्हें विकसित करने की ज़रूरत है क्योंकि कक्षा की निर्धारित पाठ्यपुस्तकें बच्चों के सीखने की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए काफ़ी नहीं हैं।

पृष्ठभूमि

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र (जीएसके)[1] को समुदाय के शिक्षा सम्बन्धी सरोकारों को दूर करने के लिए शुरू किया गया था। यह रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास के सत्तर से अधिक गाँवों में कार्य कर रहा है। जीएसके राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त तीन उदय सामुदायिक स्कूल चलाता है और सत्तर सरकारी स्कूलों के साथ काम करता है। यह सभी स्कूल सरकारी पाठ्यक्रम के अनुसार चलते हैं। यह संगठन इस बात में विश्वास करता है कि समुदाय को सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली शिक्षा का निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं होना चाहिए और उन्हें सरकार से और अधिक तथा बेहतर सेवाओं की माँग करने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। तीन स्कूलों के माध्यम से हम व्यापक समुदाय तक पहुँच पाते हैं और शिक्षा को समझने के तरीक़े में बदलाव लाने का प्रयत्न करते हैं।

अँग्रेज़ी पर विशेष रूप से ध्यान देने की ज़रूरत तब पैदा हुई जब यह देखा गया कि विद्यार्थी अन्य सभी विषयों में तो लगातार अच्छा कर रहे थे लेकिन सिर्फ़ अँग्रेज़ी में ही उन्हें मुश्किल हो रही थी।

[1] *www.http://graminshiksha.org.in/*

शिक्षकों को भी अँग्रेज़ी भाषा सिखाने में दिक़्क़त हो रही थी। पहली पीढ़ी के विद्यार्थियों की अँग्रेज़ी शिक्षण की ज़रूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से अँग्रेज़ी भाषा कार्यक्रम शुरू हुआ। भाषा शिक्षण के लिए जीएसके का दृष्टिकोण समग्र-भाषा पद्धति पर आधारित है। इस बात के कई सबूत मिलते हैं कि जब बच्चे स्कूल आते हैं तो वह पहले से ही अपने घर में बोली जाने वाली भाषा में एक निश्चित स्तर की दक्षता हासिल कर चुके होते हैं। लेकिन अँग्रेज़ी भाषा बच्चों के पर्यावरण का हिस्सा नहीं है। स्कूल में आने से पहले उन्हें इस भाषा को सुनने तक का अवसर नहीं मिलता, बोलना तो बहुत दूर की बात है। अँग्रेज़ी सीखने के लिए एक ऐसा वातावरण चाहिए जो बोधगम्य और इनपुट से भरपूर हो तथा जिसमें अधिक स्पष्ट भाषा निर्देश हों, बेशक कक्षा का संचालन इस प्रक्रिया के लिए महत्त्वपूर्ण होता है। जीएसके का पाठ्यक्रम इसी दृष्टिकोण को लागू करता है और साथ ही उपलब्ध संसाधनों और विद्यार्थियों (साथ ही शिक्षकों) की बदलती ज़रूरतों और कौशल स्तरों के प्रति संवेदनशील भी रहता है। भाषा को व्याकरण के नियमों और शब्दावली का समूह मानकर याद करा देने के बजाए मानवीय समझ और संचार के एक महत्त्वपूर्ण आधार के रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश की जाती है। हमारा मानना है कि सार्थक बातचीत एवं विविध स्थितियों में भाषा का उपयोग ही सीखने का बेहतरीन तरीक़ा है।

जीएसके का दृष्टिकोण

संक्षेप में, जीएसके का अँग्रेज़ी भाषा को लेकर काम करने का मुख्य उद्देश्य बच्चों में कार्यात्मक योग्यता विकसित करना है ताकि वे दूसरों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों को समझ पाएँ। इसे निम्नलिखित माध्यमों से प्राप्त किया जाता है :

- सुनना और पढ़ना
- बोलकर और लिखकर अपने विचारों (भावनाओं, रवैयों, राय और अवलोकनों) को व्यक्त करना
- सोच और विचारों को व्यवस्थित करने के लिए अँग्रेज़ी भाषा का उपयोग करना
- सन्दर्भ के अनुसार भाषा का उपयोग करना

विशेष ज़ोर उस सामग्री पर दिया जाता है जो विशेष रूप से विद्यार्थियों के लिए लाभदायक हो क्योंकि लक्ष्य समग्र कार्यात्मक योग्यता हासिल करना है। इसके अलावा जीएसके अँग्रेज़ी पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों के भाषा सीखने के ज्ञान को विकसित करना है। पाठ्यक्रम इस तरह से डिज़ाइन किया गया है कि विद्यार्थियों को कौशल और तकनीक[2] सीखने में मदद मिले ताकि वे स्वतंत्र रूप से भाषा का अध्ययन कर सकें और एक स्वतंत्र शिक्षार्थी बन सकें।

जीएसके अँग्रेज़ी पाठ्यक्रम विषयगत तरीक़े से आयोजित है ताकि शिक्षक और शिक्षार्थियों को अँग्रेज़ी सीखने और सिखाने के लिए एक सन्दर्भ मिल सके। यह शिक्षकों को एक ढाँचे के भीतर संसाधनों की एक विस्तृत शृंखला प्रदान करता है और अपनी कक्षा की योजना बनाने की स्वतंत्रता देता है।

कक्षा में शिक्षक समय के अनुसार एक उचित थीम चुनते हैं। जीएसके स्कूलों में बहु-स्तरीय कक्षाएँ हैं। शिक्षक बच्चों की आयु की बजाए उनके सीखने के स्तर के अनुसार कक्षा का नियोजन करते हैं। सभी बच्चे अपने पूर्व ज्ञान और अनुभवों का इस्तेमाल करते हुए शिक्षक की मदद से अपनी समझ का निर्माण करते हैं। इस प्रकार एक थीम शुरू होती है और बच्चों के अनुभवों को जोड़ते हुए आगे बढ़ती है। इन थीमों में कविताएँ, पाठ्य और कहानियाँ शामिल होती हैं, इन पाठ्यों में रोज़मर्रा के शब्द और नए शब्द दोनों का मिश्रण होता है। पाठ्य कभी-कभी तो पाठ्यपुस्तक के होते हैं, कभी किसी कहानी की किताब के और कभी किसी ख़ास

[2] यहाँ हम कौशल और तकनीक के बीच अन्तर कर रहे हैं। तकनीक को किसी कार्य को पूरा करने के लिए उपयोग की जाने वाली एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है, और कौशल पूर्व-निर्धारित परिणामों को प्राप्त करने की एक सीखी हुई क्षमता है, जो अकसर समय, ऊर्जा, या दोनों के न्यूनतम खर्च के साथ हासिल की जाती है। उदाहरण के लिए मुहावरे सीखना एक तकनीक होगी, लेकिन उन्हें सही सन्दर्भ में उपयोग करना एक कौशल होगा; विराम चिह्नों का ज्ञान प्राप्त करना एक तकनीक होगी, लेकिन उनका सही ढंग से उपयोग करना एक कौशल है।

शीतकालीन थीमपरक कक्षाएँ

ज़रूरत को पूरा करने के लिए उनकी रचना की जाती है। इस तरह पाठ्यपुस्तकें बच्चे के सीखने के मार्ग को निर्धारित नहीं करती हैं, बल्कि संसाधन के रूप में उपयोग में लाई जाती हैं। ऐसा करने से यह जानने में मदद मिलती है कि बच्चों को क्या पता है और उन्हें बाद में अपरिचित पाठ्य(पाठ्यों) की समझ बनाने के लिए क्या जानने की आवश्यकता होगी। शब्दावली सीखने के लिए भी थीमों को प्रासंगिक बनाया जाता है। शिक्षकों को शब्दों की एक सूची सुझाई जाती है जो थीम से सम्बन्धित होती है और उन्हें इस सूची में नए शब्द जोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। किसी थीम को पढ़ाने के दौरान इन शब्दों का उपयोग कई तरीक़ों से किया जाता है। थीमपरक अधिगम के माध्यम से हम भाषा की समझ को बेहतर बनाने की कोशिश करते हैं जिसका समर्थन शायद अन्य रणनीतियाँ नहीं कर सकती हैं। यहाँ भाषा अधिग्रहण में संस्कृति और सन्दर्भ प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

कक्षा का वातावरण बच्चों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करता है कि वे ख़ुद को अभिव्यक्त करें, जिससे उन्हें सोचने, बहस करने और संकल्पना बनाने के अवसर मिलते हैं। कक्षा में मिलने वाले ऐसे अवसरों की वजह से बच्चे कक्षा में जो कुछ सीखते हैं उसे अपने स्वयं के जीवन के साथ जोड़ पाते हैं। सीखने की यह व्यक्तिगत प्रकृति बच्चों में आत्मविश्वास भी उजागर करती है क्योंकि उन्हें अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

कक्षा का भौतिक वातावरण, उसकी व्यवस्था और डिस्प्ले की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। उदाहरण के लिए जिन कहानियों पर काम करना होता है, उन्हें लिखकर कक्षा में प्रदर्शित किया जाता है ताकि बच्चे उससे परिचित हो सकें – ये निर्धारित 'पाठ्यपुस्तक' से हो भी सकते हैं और नहीं भी। इससे बच्चों को पढ़ने के लिए सिर्फ़ पाठ्यपुस्तकों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता, जो अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकता है, ख़ासकर शुरुआती पाठकों के लिए। बच्चों के सीखने को प्रोत्साहित करने के लिए उनके वर्तमान काम और पिछले काम का प्रदर्शन किया जाता है जो उन्हें अपने काम के साथ जुड़ने में मदद करता है।

कक्षा का व्यवस्थापन

कक्षाओं को विभिन्न स्तरों में आयोजित किया जाता है ताकि बच्चों को अपने सहपाठियों के साथ सीखने का मौक़ा मिल सके। इसके अलावा शिक्षक को इस बात की स्वतंत्रता है कि वे अपनी पाठ योजना ख़ुद निर्धारित करें और उपयोग में लाई जाने वाली सामग्री को भी ख़ुद ही चुन सकें – जो या तो पाठ्यपुस्तक से ली जा सकती है या फिर अन्य पुस्तकों[3] से और या जीएसके दिशा-निर्देशों के अनुसार निर्मित सामग्री से ली जा सकती है। ये दिशा-निर्देश जेंडर समता, वैज्ञानिक मनोवृत्ति, सामाजिक स्तरीकरण के साथ-साथ अधिगम के स्तर पर केन्द्रित हैं। पाठ्यपुस्तकों में ऐसे चित्रों के कुछ उदाहरण मिलते हैं जिनमें महिलाएँ पुरुषों के पैरों[4] में बैठी हैं; यह वास्तविकता हो सकती है, लेकिन इनका इस्तेमाल ऐसी प्रथाओं पर बातचीत के लिए उत्प्रेरक के रूप में किया जा सकता है।

कक्षा में तीन प्रकार की गतिविधियाँ होती हैं : बड़े समूह वाली गतिविधियाँ (पूरी कक्षा को शामिल करते हुए), छोटे समूह की गतिविधियाँ और व्यक्तिगत गतिविधियाँ। कविताएँ, कहानी सुनाना और खेल आमतौर पर कक्षा की शुरुआत में किए जाते हैं।

प्रत्येक दिन कक्षा कविता के साथ शुरू होती है,

[3] तूलिका, कथा, प्रथम, सीबीटी, एनबीटी और ऐसे ही अन्य प्रकाशकों की कहानियों की पुस्तकें।

[4] राज्य बोर्ड की वर्तमान पाठ्यपुस्तक, रिमझिम से चित्र।

'बुद्धिमान' शब्द के सही अर्थ को बताने के लिए 8 साल के दो बच्चों के बीच होने वाली बातचीत (घरेलू भाषा में) में दख़ल दिया गया –

बच्चा : 'बुद्धिमान' कौन है?

शिक्षक : 'बुद्धिमान' से तुम्हारा क्या मतलब है?

बच्चा : हम दोनों ही हिन्दी में किताब पढ़ पाते हैं इसलिए हम दोनों ही हिन्दी में समान रूप से बुद्धिमान हैं।

शिक्षक : पर 'बुद्धिमान' शब्द का अर्थ क्या होता है?

बच्चा : ऐसा व्यक्ति जिसके पास किसी भी विषय का अधिक ज्ञान हो!

ये कविताएँ कुछ परिचित होती हैं और कुछ अपरिचित। आमतौर पर इसके बाद उस दिन की योजनानुसार या तो कहानी सुनाने या पाठ्य पढ़ने का सत्र होता है। शिक्षकों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि वे विद्यार्थियों के लिए इन कहानी सत्रों को दिलचस्प बनाएँ, इसके लिए कभी-कभी मुखौटों या कठपुतलियों का उपयोग किया जा सकता है। बोले गए शब्द के अर्थ को व्यक्त करने के लिए स्वर ऊँचा-नीचा करना और हाव-भाव प्रदर्शित करना महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वे आंगिक अभिनय के साथ एक *बिइइइइइइग* एलिफेंट या एक *स्केएएएएएएरी* लॉयन के बारे में बात कर सकते हैं जिन्हें निरन्तर अनुवाद की आवश्यकता नहीं होती है। इस प्रकार शब्द-दर-शब्द अनुवाद से बचा जा सकता है और शिक्षक बहुत सारी जानकारी विद्यार्थियों को दे पाते हैं। उदाहरण के लिए *ऑन अ हॉट समर डे* वाक्यांश का अर्थ समग्र रूप में बताया जाएगा। शिक्षक को अर्थ समझाने से पहले एक-दो बार अँग्रेज़ी में कहानी पढ़ने/सुनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। वे बच्चों से पता लगाते हैं कि उन्होंने कितना समझा है। पाठ को फिर से पढ़कर वे पाठ के विभिन्न पहलुओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। उदाहरण के लिए *अनवर, हू एंजॉय्ड प्लेइंग इन द मस्टर्ड फील्ड्स*, *वुड सिट क्लोज़ टु द फायर एट नाइट।* शिक्षक इसका उपयोग 'क्लोज़ टु' वाक्यांश की समझ को सुदृढ़ करने के लिए करते हैं। बाद में विद्यार्थी इस वाक्यांश का उपयोग कर सकते हैं जैसे कि *'माई हाउस इज़ क्लोज़ टु द टपल'* या *'माई हाउस इज़ क्लोज़ टु द रेल्वे स्टेशन'* इत्यादि। बच्चे अपने अवलोकनों और अनुभवों के आधार पर तथा अपनी जानकारी की मदद से वाक्य बनाते हैं। यह गतिविधि कभी-कभी शिक्षकों द्वारा समूह में की जाती है, जहाँ बच्चे वाक्य बनाते हैं और शिक्षक उन्हें बोर्ड पर लिखते हैं। हो सकता है कि अलग स्तर वाले बच्चे इन वाक्यों को अपने आप ही लिखने में सक्षम हों। एक कक्षा में तो बच्चों ने बड़े उत्साह के साथ इस तरह के वाक्य बताए। जैसे -*आई वॉक विद माई ग्राण्डफादर टु द*_____ और बाद में कक्षा का अधिकांश समय उन्होंने विभिन्न विकल्प बनाने में बिताया और जहाँ वे अँग्रेज़ी शब्द नहीं जानते थे, उन्होंने शिक्षक से पूछकर और विकल्प बनाए।

कहानी पढ़ने/सुनाने के बाद उससे सम्बन्धित अन्य गतिविधियाँ भी की जाती हैं। छोटे बच्चों को इस

पढ़ना, बात करना और अर्थ समझना

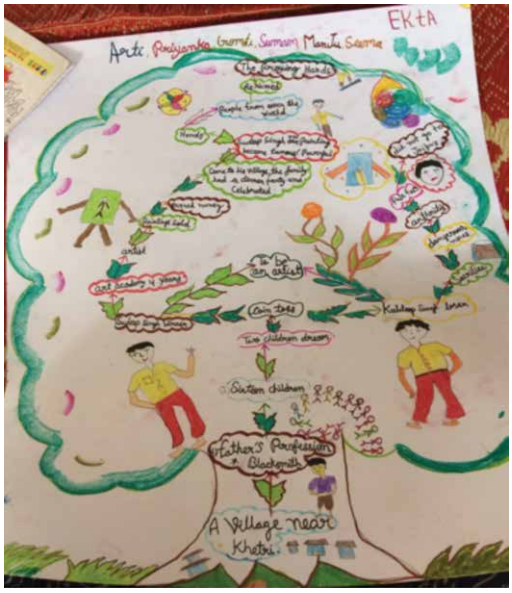

चित्र कहानी

बात के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि उन्होंने कहानी से जो कुछ समझा/महसूस किया या याद रहा, उसका चित्र बनाएँ। बड़े बच्चों को शिक्षक की सहायता से अपने स्तर और रुचि के आधार पर शब्द मानचित्र, स्टोरीबोर्ड, रोल प्ले या सार लेखन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। भाषा सीखने की प्रारम्भिक अवधि के दौरान, दोहराव वाली कहानियाँ बच्चों को भाषा अभ्यास के अवसर प्रदान करती हैं। एनसीईआरटी[5] द्वारा प्रकाशित एक पूरक पाठ्यपुस्तक रेनड्रॉप की *छोटू* नाम की कहानी को, जिसमें छोटू नामक चूहा भाग जाता है, कक्षा में अलग-अलग तरीक़े से इस्तेमाल किया गया। सुबह स्कूल की प्रार्थना सभा में प्रस्तुत रोल प्ले में बच्चों ने सरल वाक्यों का प्रयोग किया जैसे *कम बैक छोटू, कम बैक नाउ!* शिक्षक ने फिर इसे एक ऐसे खेल में बदल दिया, जिसमें बच्चे एक लाइन में खड़े होते हैं और उनमें से एक बच्चा अपने दोस्तों को बुलाता है। पाठ के अन्त में दी गई कुछ गतिविधियों का भी शिक्षक उपयोग करते हैं, लेकिन वे कक्षा का प्रमुख बिन्दु नहीं होतीं। जिन गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी ज़रूरी होती है, वे अधिक उपयोगी पाई गई हैं।

[5] यह पुस्तक राजस्थान के पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं है। एनसीईआरटी के एक सलाहकार द्वारा साझा की गई इस पुस्तक से बहुत सहायता मिली।

समूह कार्य शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। यहीं पर विद्यार्थी बहु-स्तरीय कक्षा का लाभ लेने में सक्षम हो पाते हैं। कभी-कभी लगभग एक समान स्तर वाले बच्चों को एक समूह में रखा जाता है और कभी अलग-अलग स्तरों वाले बच्चों का एक समूह बनाया जाता है। ये समूह गतिशील होते हैं, विषय के अनुसार बदलते रहते हैं। समूह पठन, शब्द मानचित्र, प्रश्न बनाने जैसी गतिविधियाँ की जाती हैं ताकि बच्चे सामूहिक समझ तक पहुँच सकें। बच्चे अकसर एक समूह में बैठते हैं और एक-दूसरे को पाठ पढ़कर सुनाते हैं। वे कहानी के अर्थ पर चर्चा करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक से मदद लेते हैं। अर्थ समझते हुए पढ़ना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। अकसर यह देखा जाता है कि बच्चे पूरा पाठ पढ़ तो लेते हैं, लेकिन पूरी तरह से यह नहीं जान पाते कि उसका मतलब क्या है। बड़े और छोटे समूह में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से शिक्षक बच्चों को अर्थ समझते हुए पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जिन बच्चों को पढ़ने में कठिनाई होती है, वे स्वयं पाठ पढ़ने की कोशिश करने से पहले एक-दो बार पाठ को सुन सकते हैं। बच्चे समूह में वर्कशीट भी पूरी करते हैं। असल विचार यह है कि सीखना प्रतिस्पर्धा के बजाए आपसी सहयोग के रूप में हो।

कक्षाएँ बहुस्तरीय हैं और वहाँ कुछ दिशा-निर्देशों का पालन किया जाता है। *पहले स्तर*, में अधिकतर प्री-स्कूल स्तर के बच्चे शामिल हैं। चूँकि ये बच्चे पहली बार द्वितीय भाषा का परिचय प्राप्त कर रहे हैं, इसलिए उन्हें मौखिक रूप से, कविता, गीतों और कुछ सरल कहानियों के माध्यम से, द्वितीय भाषा का माहौल दिया जाता है। आमतौर पर कक्षा में जो डिस्प्ले या सामग्री रखी होती है वे द्विभाषी होती हैं। बच्चों से शायद ही कभी ख़ुद पढ़कर या समझकर उत्तर देने के लिए कहा जाता हो। इस स्तर पर हमें इस बात से सरोकार रहता है कि भाषा के साथ सम्पर्क एवं परिचय बढ़ाया जाए। बच्चे अभिनय करते हुए बहुत सारे बालगीत एवं कविताएँ गाते हैं और छोटे-छोटे वाक्य बोलते हैं जैसे *'माई नेम इज़ रानी एंड आई ईट चपाती'*। प्राथमिक वर्षों के दौरान घर में बोली जाने वाली भाषा को मज़बूत

करना महत्त्वपूर्ण होता है। शोधकार्य सदा यही इंगित करते रहे हैं कि द्वितीय भाषा में दक्षता हासिल करने के लिए घर में बोली जाने वाली भाषा में प्रवीणता ज़रूरी है। इसलिए शिक्षा का माध्यम घर में बोली जाने वाली भाषा है।

दूसरे स्तर, में अकसर ऐसे बच्चे होते हैं, जो शुरुआती एक से दो साल तक अँग्रेज़ी के सम्पर्क में आ चुके होते हैं। वे सरल निर्देशों का पालन करने में सक्षम होते हैं और सामान्य रूप से इस्तेमाल किए जाने वाले शब्दों को समझते हैं। इस स्तर पर बच्चे पढ़ना और लिखित सामग्री के साथ जुड़ना शुरू कर देते हैं। इस स्तर पर, वर्तनी या व्याकरण पर अत्यधिक ज़ोर दिए बिना, बच्चों को मौखिक और लिखित रूपों में भाषा का इस्तेमाल करने को प्रोत्साहित किया जाता है। हाँ, लेकिन ज़रूरत पड़ने पर शिक्षक उनकी ग़लतियों को ठीक ज़रूर करते हैं। बच्चे अपने परिवेश को देखते हैं और वाक्यांशों की रचना करते हैं। उदाहरण के लिए बच्चों को रंगों के नाम सिखाते समय एक शिक्षक ने उन्हें कक्षा से बाहर जाकर विभिन्न चीज़ों के रंग देखने के लिए कहा। बच्चे कक्षा में वापस आए और बताया कि उन्होंने *व्हाइट क्लाउड्स, ब्राउन स्टोन्स, ग्रीन ट्रीज़, ग्रीन ग्रास, व्हाइट टैंक, ब्लू स्काई, रेड क्लासरूम* आदि देखे। बच्चे अपने अनुभवों से सरल वाक्य बनाते हैं जैसे *'आई सॉ अ व्हाइट क्लाउड'*। इस स्तर पर बच्चे भाषा की संरचना के बारे में समझने लगते हैं। इस स्तर पर (जैसा कि हर स्तर के साथ किया जाता है) शिक्षक बच्चों को विभिन्न कहानियों और पाठ्यों के सम्पर्क में लाते हैं। यह स्तर, कक्षा पहली और दूसरी के बच्चों के स्तर के बराबर है।

तीसरा स्तर – तीसरी, चौथी और पाँचवीं कक्षा के अनुरूप है। इस स्तर पर बच्चों की शब्दावली में काफ़ी बढ़ोतरी हो गई होती है और इसलिए वे अधिक जटिल विचारों वाले पाठ्य को समझने में सक्षम होते हैं। वे सवालों के जवाब अँग्रेज़ी में दे पाते हैं और अपने अनुभवों का वर्णन अधिक विस्तार से करने में सक्षम होते हैं।

चूँकि ये स्तर आयु के अनुसार निर्धारित नहीं हैं, इसलिए दूसरी कक्षा के बच्चे पहली कक्षा के स्तर पर हो सकते हैं और पहले स्तर की गतिविधियों से अधिक लाभ उठा सकते हैं। शिक्षक को बच्चों के भाषा-अधिग्रहण के स्तर की पहचान करने में कुशल होना पड़ता है। कक्षा में दिन-प्रतिदिन के अवलोकन से इस बात का पता लगाया जाता है। शिक्षक प्रत्येक बच्चे के लिए पोर्टफ़ोलियो बनाते हैं जो उनकी प्रगति को अंकित करने में भी मदद करता है।

शैक्षणिक चुनौतियाँ

अँग्रेज़ी सिखाने में आने वाली चुनौतियों का एक कारण पूर्व में अँग्रेज़ी भाषा से रूबरू होने के अवसरों का अभाव है, ख़ासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। अधिकांश शिक्षकों ने ख़ुद भी ऐसे ही तरीक़ों से पढ़ाई की है जो व्याकरण के नियमों को रटकर भाषा सीखने को प्रोत्साहित करते हैं। वे संज्ञा/सर्वनाम/विशेषण को पहचान तो लेते थे, लेकिन किसी विचार को एक साथ जोड़ना और उसे अँग्रेज़ी में प्रस्तुत करना अधिकांश के लिए एक चुनौतीपूर्ण बात थी। जो लोग अँग्रेज़ी में बात कर सकते हैं, उनका ग्रामीण क्षेत्र में मिलना मुश्किल है, जो मिलते हैं वे लोग शहरों/क़स्बों में नौकरी की तलाश करते हैं। इसलिए शिक्षकों के साथ उनकी भाषा सम्बन्धी दक्षताओं पर काम करने की ज़रूरत महसूस की गई। शिक्षकों ने अपनी ख़ुद की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए भाषा सीखने की प्रक्रिया में भाग लिया। कार्यशालाओं में उन्होंने रोल-प्ले, वाद-विवाद करने, पकवान बनाने की विधियाँ लिखने, कहानियाँ लिखने और इसी तरह की कई गतिविधियों में भाग लिया। लेकिन अभी भी, उनके अधिगम के स्तर को और बेहतर बनाने के लिए बहुत कुछ करना बाक़ी है।

भाषा सीखने के लिए प्रासंगिक सामग्री की कमी एक और बड़ी चुनौती है। विशेष रूप से अँग्रेज़ी के लिए निर्धारित की गई पाठ्यपुस्तकें बच्चों के स्तर से बहुत ऊँची हैं। राजस्थान राज्य की नीति के अनुसार पाँचवीं कक्षा में बोर्ड की परीक्षा होती है जिसमें पास होना पड़ता है। समस्या सिर्फ़ स्तर की नहीं, बल्कि पाठ्यपुस्तकों की सामग्री की भी है। इनमें ग्रामीण जीवन के चित्रण का अभाव हैं। हाल

के दिनों में पाठ्यपुस्तकों की सामग्री की व्यापक रूप से आलोचना की गई है। पाठ्यपुस्तकों को ऐसा होना चाहिए जो विद्यार्थियों को स्व-अधिगम के अवसर प्रदान करें, लेकिन ऐसा है नहीं।

अन्य शैक्षणिक चुनौतियाँ भी हैं, लेकिन ऊपर वर्णित चुनौतियों जितनी प्रमुख कोई नहीं है।

आगे की राह

शैक्षणिक वर्ष 2016 से ही जीएसके इसी दृष्टिकोण के साथ काम कर रहा है और समय के साथ इसे सुधारता भी गया है। यहाँ तक कि मूल टीम में कुछ बदलाव भी हुए हैं।

शिक्षक प्रशिक्षण की ऐसी कार्यपद्धति कारगर रही – जिसमें प्रशिक्षण के बाद, शिक्षकों ने स्वतंत्र रूप से या टीम के सहयोग से बच्चों के साथ काम किया और समय-समय पर उनके काम का अवलोकन किया।

समग्र भाषा शिक्षण दृष्टिकोण कक्षा-5 की बोर्ड परीक्षा देने वाले लगभग सभी बच्चों के लिए सही साबित हो रहा है क्योंकि उन्हें अँग्रेज़ी में ए या बी ग्रेड मिल रहे हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, इस दृष्टिकोण के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्री निर्धारित पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित नहीं है और शिक्षकगण अपने प्रशिक्षणों और गतिविधि-बैंकों के माध्यम से सुझाए गए विभिन्न प्रकार के पाठ्यों के आधार पर अपनी पाठ योजनाओं को विकसित करने के लिए स्वतंत्र हैं। शिक्षक सहायता सामग्री के रूप में बनाया गया गतिविधि बैंक इस कार्यक्रम के प्रमुख परिणामों में से एक है। यह गतिविधि बैंक उन लोगों के लिए एक संसाधन के रूप में कार्य करता है जो पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों को अँग्रेज़ी पढ़ाने में रुचि रखते हैं। इससे कक्षा के अन्दर और बाहर दोनों जगह अँग्रेज़ी का अधिक उपयोग हुआ है।

वे क्षेत्र जिन पर ध्यान देने की ज़रूरत है उनमें पूर्व समीक्षित अँग्रेज़ी शिक्षण-अधिगम मॉड्यूल (एप्रोच पेपर, गतिविधि-बैंक और संसाधनों सहित) को सुदृढ़ बनाना शामिल है। ऐसा करने से हम अपनी सीख को ऐसे अधिक-से-अधिक लोगों के साथ साझा करने में सक्षम हो सकेंगे जो पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों को अँग्रेज़ी सिखाने में रुचि रखते हैं।

एकता धनकर अँग्रेज़ी प्रोग्राम टीम के साथ ग्रामीण शिक्षा केन्द्र में काम करती हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय से शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। उनसे dhankher@graminshiksha.org.in पर सम्पर्क किया जा सकता है।

ज्योत्स्ना लाल ग्रामीण शिक्षा केन्द्र के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं। वे अँग्रेज़ी कार्यक्रम के लिए एक सलाहकार के रूप में काम करती हैं। उनसे jyotsna.lall@akdn.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

शिप्रा सुनेजा अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक हैं। वे बाल विकास और प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के कोर्स पढ़ाती हैं। वे ग्रामीण शिक्षा केन्द्र में अँग्रेज़ी कार्यक्रम के सलाहकार के रूप में भी कार्य करती हैं। उनसे shipra.suneja@gmai.com सम्पर्क किया जा सकता है।

वर्धना पुरी दिल्ली विश्वविद्यालय में पीएचडी की अध्येता हैं। वे ग्रामीण शिक्षा केन्द्र में अँग्रेज़ी कार्यक्रम के सलाहकार के रूप में कार्य करती हैं। उनसे vardhna@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल **पुनरीक्षण :** सात्विका ओहरी **कॉपी एडिटर :** अंजना राव